हिन्दी आत्मकथा लेखन में लोकतान्त्रिक चेतना : स्वरूपगत अध्ययन

हिन्दी में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु

प्रस्तावित रूपरेखा

शोध छात्र

सुखवेन्द्र कुमार

शोध निर्देशक

डॉ. बृजराज कुमार सिंह

हिन्दी विभाग, कला संकाय

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)

दयालबाग, आगरा - 282005

2024

हिन्दी आत्मकथा लेखन में लोकतांत्रिक चेतना : स्वरूपगत अध्ययन

आत्मकथा कथात्मक गद्य की एक ऐसी विधा है जिसमें व्यक्ति अपने समय और समाज के संदर्भ में सजगता के साथ अपने अतीत की रचनात्मक अभिव्यक्ति करता है | दरअसल आत्मकथा व्यक्ति विशेष के जीवन के उतार-चढ़ाव, खट्टे-मीठे अनुभवों का दस्तावेज होता है | जीवन के यह अनुभव लेखक को अपनी परिस्थितियों से जद्दो-जहद करते हुए आत्म विश्लेषण करने की प्रक्रिया में मिलते हैं |

आत्मकथा (ऑटो बायोग्राफी) शब्द का पहला प्रयोग सन 1796 ई में जर्मनी के विद्वान हर्डर ने किया| तत्पश्चात यह शब्द ब्रिटेन पहुंचा जहां सर्वप्रथम रॉबर्ट सऊदी ने इसका इस्तेमाल 1809 ईस्वी में किया | इस समय तक आत्मकथा एक ऐसी विधा के रूप में जानी जाती रही जो कि एक जीवनी की तरह है जिसे व्यक्ति स्वयं लिखता है यानी आत्म जीवनी (सेल्फ बायोग्राफी)।

आत्मकथा निश्चित रूप से कथाकार के अतीत की कथा तो है ही परंतु एक अच्छी आत्मकथा अतीत और वर्तमान के मध्य एक झीनी रेखा भी बनाती चलती है। वह वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शन भी करती है। आत्मकथाकार का एक प्रमुख उद्देश्य आगामी समाज को अपनी और तत्कालीन परिवेश की समस्त अच्छी-बुरी परिस्थितियों एवं परंपराओं से अवगत कराना होता है जिससे आगामी समाज अपनी ऐतिहासिक परिस्थितियों को समझ भविष्य में खुद को बेहतर बना पाए। एक अच्छी आत्मकथा में लेखक को अपना संपूर्ण सत्य कह देने का साहस एवं पाठकों को अपने में खोजने की लालसा होनी चाहिए जिससे आत्मकथा सिर्फ व्यक्तिगत दस्तावेज न रहकर सामाजिक दस्तावेज हो जाए । आत्मकथा में सामाजिक, सांस्कृतिक , आर्थिक एवं राजनीतिक पक्ष भी समाविष्ट होते हैं | यदि आत्मकथा को परिभाषिक तौर पर देखें तो हिंदी साहित्य कोश के अनुसार-" **आत्मकथा लेखक के अपने जीवन से संबंधित वर्णन है आत्मकथा द्वारा अपने बीते हुए जीवन का सिंहावलोकन और व्यापक पृष्ठभूमि में अपने जीवन का महत्व दिखलाया जाना संभव है।"**

आत्मकथा अपने स्वरूप में ही सबसे लोकतांत्रिक विधा है | अपनी बात को स्पष्ट और यथार्थपरकता से कह देने का साहस , शिल्पगत एवं संवेदनात्मक बंधनों से मुक्ति एवं समाज की रूढ़ियों को , प्रथाओं को नग्नता से व्यक्त कर देने का साहस जितना आत्मकथाओं में होता है शायद ही किसी अन्य विधा में हो | हिंदी आत्मकथा लेखन में लोकतांत्रिक चेतना की अभिव्यक्ति के स्वरूप के अध्ययन के संबंध पर विचार करते हुए अव्वल तो यह ध्यान में रखना जरूरी है की लोकतंत्र केवल राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था मात्रा नहीं है वह एक ऐसी मानसिकता भी है जो सहिष्णुता की संस्कृति, दूसरों का सम्मान, मतांतरों का स्वीकार, विचारों की अनेकता का आदर, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता, अनेकता एवं अनेकरूपता, विविधता, मुखरता, परिवर्तनों के प्रति सहजता, समता बोध , अंतर एवं अंतर विरोधों के अस्तित्व का स्वीकार एवं उसकी अर्थवत्ता की पहचान तथा संवाद की तत्परता विकसित करना भी है। आत्मकथा भाषाई लोकतंत्र भी स्थापित करती है | भाषाई लोकतंत्र से आशय है व्याकरण की तानाशाही की उपेक्षा। आत्मकथाओं में इतिहास का तत्व भी विद्यमान रहता है क्योंकि आत्मकथा व्यक्ति विशेष के अतीत की कहानी के साथ उसके समस्त सामाजिक, सांस्कृतिक परिवेश का अध्ययन भी है |

चूँकि आत्मकथा लेखक के जीवन से संबंधित होती है, अतः आत्मकथा कोई भी लिख सकता है परंतु आचार्य नंददुलारे वाजपेई का मत इससे इतर था उनका मानना था कि आत्मकथा केवल प्रतिष्ठित एवं सुप्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा ही लिखी जानी चाहिए | **“........आत्मकथा लिखने योग्य हिंदी में कितने आदमी हैं? कितने ऐसे महाचरित हैं, जिनकी जीवनी हिंदी जनता की पथ नियामिका बन सकती है |”** परंतु प्रेमचंद जी ने आत्मकथा की इस अभिजात चेतना से मुक्त इसके लोकतांत्रिकरण की बात कही है | नंद दुलारे वाजपेई जी को जवाब देते हुए प्रेमचंद जी लिखते हैं-**“....... अब रह गई बात की हिंदी में ऐसे लिखने वाले कितने हैं ; जिनकी जीवनी हिंदी जनता की पथ नियामिका बन सकती है आपका ख्याल है एक भी नहीं ; मेरा खयाल है कि ; मेरे घर के मेहतर के जीवन में भी कुछ ऐसे रहस्य हैं जिनसे हमें प्रकाश मिल**

सकता है........ किसी भी मनुष्य का जीवन इतना तुच्छ नहीं , जिसमें बड़े-बड़े महाचरितों के लिए कुछ न कुछ विचार की सामग्री ना हो |" अर्थात आत्मकथा कोई भी लिख सकता है परंतु जरूरत है सत्य- परायणता और व्यक्तिगत ईमानदारी की, आत्म विज्ञापन की नहीं। पश्चिमी साहित्य में आत्मकथा लेखन की एक समृद्ध परंपरा रही है किंतु हिंदी साहित्य में आत्मकथा लेखन की एक समृद्ध परंपरा का अभाव झलकता है | इसके मूल में कुछ सांस्कृतिक कारण विद्यमान रहे हैं - जैसे भारतीय दार्शनिक परंपरा में आत्म को नश्वर मानने की वजह वैयक्तिक स्वतंत्रता का कोई स्थान नहीं रह जाता एवं भारत में पूर्व जन्म की अवधारणा भी प्रचलित है जिससे वैयक्तिक कर्म को मानता नहीं मिलती क्योंकि इस जन्म में व्यक्ति जो भी कर रहा है वह पुनर्जन्म का फल है; अर्थात पूर्व निर्धारित है | परिणामतः वह सारे बीज- भाव जैसे व्यक्ति की जिंदगी के निजी अनुभव, उसकी आदतें, उसकी जिंदगी के ब्योरे, उसकी जिंदगी की जद्दो-जहद की कोई मान्यता नहीं रह जाती या महत्वहीन हो जाती है | शुरुआती साहित्य लेखन में तो कई रचनाएं ऐसी भी मिलती हैं जिनके रचनाकार का नाम ही नहीं मिलता या फिर किसी अन्य प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम से कृतियों को लिखा गया है क्योंकि व्यक्तिगत पहचान की लालसा न रखना भारतीय संस्कृति की गौरवमयी विशिष्टताओं में से एक रही है | हिंदी की पहली आत्मकथा हमें 17वीं सदी में आकर मिलती है जब 1641 ईस्वी में बनारसीदास जैन ने 'अर्द्धकथानक' लिखी।

आत्मकथाओं के बीजारोपण हेतु उर्वर भूमि आधुनिक काल में आकर मिली | आधुनिक काल में पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार हुआ जिसके परिणाम स्वरुप वैयक्तिकता, अहं की चेतना, नवीन वैज्ञानिक चेतना, आत्मवृत्ति का भाव, अतीत से स्वायत्तता एवं आत्म सजता आदि विचार चलन में आए जिन्होंने हिंदी आत्मकथा लेखन के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की | आधुनिक काल से ही हिंदी साहित्य में आत्मकथाओं का विधिवत लेखन प्रारंभ हुआ; स्वयं भारतेंदु ने 'कुछ आपबीती कुछ जग बीती' लिखकर हिंदी में सशक्त आत्मकथा लेखन की शुरुआत की | तत्पश्चात भारतेंदु युग में ही सुधाकर द्विवेदी ने अपनी आत्मकथा 'राम कहानी' एवं अंबिका दत्त व्यास ने 1901 ईस्वी में अपनी आत्मकथा 'निजी

वृतांत' लिखकर आत्मकथा लेखन को और सशक्त बनाया | 1932 ईस्वी में प्रेमचंद द्वारा 'आत्मकथा अंक' का संपादन किया गया जो कि हिंदी में आत्मकथाओं के विकास में अति महत्वपूर्ण प्रयास था | इसमें हिंदी के प्रसिद्ध रचनाकारों ने आत्मकथात्मक प्रसंग लिखे थे | श्याम सुंदर दास द्वारा रचित 'मेरी आत्म कहानी' (1941); बाबू गुलाब राय द्वारा लिखित रचित 'मेरी असफलताएं'(1941), राहुल सांकृत्यायन द्वारा रचित 'मेरी जीवन यात्रा'(1946), यशपाल द्वारा रचित 'सिंहावलोकन '(1951 से 55), पंडित बेचन शर्मा उग्र द्वारा रचित 'अपनी खबर' (1960) एवं हरिवंश राय बच्चन कृत 'क्या भूलूं क्या याद करूं' कुछ चर्चित हिंदी आत्मकथाएं हैं।

हिंदी आत्मकथा लेखन में एक नई परंपरा का सूत्रपात 1995 ईस्वी में हुआ जब मोहनदास नेमिशराय ने अपनी आत्मकथा 'अपने-अपने पिंजरे' लिखी | यह पहली दलित आत्मकथा है | यह रचना अपनी संवेदना और शिल्प को लेकर भी नवीन रचना है | ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा रचित 'जूठन' भी हिंदी की एक प्रमुख दलित आत्मकथा है | हिंदी के शुरुआती आत्मकथा लेखन में स्त्रियों की आत्मकथाएं प्रायः नहीं मिलती क्योंकि हमारा सामाजिक ढांचा स्त्रियों को साहस के साथ सच बोलने एवं उनकी वैयक्तिक स्वतंत्रता की इजाजत नहीं देता है | 1956 ईस्वी में 'मेरी जीवन यात्रा' लिखकर जानकी देवी बजाज ने महिला आत्मकथा लेखन का सूत्रपात किया | मैत्रेयी पुष्पा कृत 'कस्तूरी कुंडल बसै' एवं 'गुड़िया भीतर गुड़िया'; रमणिका गुप्ता द्वारा रचित 'हादसे' एवं 'आपहुदरी', मन्नू भंडारी कृत 'यह एक कहानी यह भी', प्रभात खेतान द्वारा रचित 'अन्या से अनन्या', चंद्रकिरण सोनरेक्शा कृत 'पिंजरे की मैना' हिंदी की चर्चित महिला आत्मकथाएं हैं | कौशल्या वैशयंत्री कृत 'दोहरा अभिशाप' एवं सुशीला टाकभोरे कृत 'शिकंजे का दर्द' हिंदी में प्रमुख दलित महिला आत्मकथाएं हैं ।

शोध का उद्देश्य—

आत्मकथा कथाकार के जीवन की कथा है साथ ही आत्मकथा का ऐतिहासिक तत्व इस विधा को सामाजिक एवं

सांस्कृतिक चेतना से जोड़ता है | इस शोध का उद्देश्य कथाकार की जीवन स्थिति का अध्ययन कर एवं तत्कालीन समय की स्थिति की समझ रखते हुए भविष्य के लिए नया पुल तैयार करने की है | हिंदी में आधुनिक काल से पहले आत्मकथाओं की प्रचुरता नहीं रही है आधुनिक कालीन परिस्थितियां आत्माभिव्यक्ति के आयाम को किस तरह से प्रभावित करती हैं, इसकी पड़ताल करना भी हमारे शोध का प्रमुख उद्देश्य होगा | आत्मकथा व्यक्ति के जीवन एवं उसकी परिस्थितियों की साहित्यिक अभिव्यक्ति है | मेरे शोध का उद्देश्य ऐतिहासिक एवं वैयक्तिक परिस्थितियों से वह सीख लेना है जिससे हम अपने भविष्य को सुगम, सहज एवं अर्थवत्ता पूर्ण बना सकें| चूँकि हिंदी साहित्य की 'आत्मकथा' विधा मुख्यतः आधुनिक काल में ही पनपी; अतः आधुनिक काल की वह बीज परिस्थितियाँ एवं उन बदलती परिस्थितियों में अभिव्यक्ति के लोकतांत्रीकरण के बदलते स्वरूप का अध्ययन भी इस शोध का प्रमुख उद्देश्य होगा | अभिव्यक्ति की आजादी एवं लोकतांत्रिक चेतना के साथ हिंदी आत्मकथाओं का बदलता स्वरूप एवं आत्मकथा और लोकतांत्रिक चेतना के आपसी द्वंद्व की एक व्यापक व्यापक समझ पैदा करना भी मेरे शोध का प्रमुख उद्देश्य है।

शोध का महत्व:

शोध, पूर्व ज्ञान का परिष्करण एवं परिमार्जन करता है एवं नवीन तथ्यों की खोज के साथ मानवीय ज्ञान को व्यापक एवं वहुआयामी बनाता है | इस संदर्भ में मेरे द्वारा किया गये शोध में आत्मकथा, आधुनिकता एवं लोकतंत्रीकरण चेतना के मध्य एक सामंजस्थ स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है | यह शोध आत्मकथाओं के समीक्षात्मक अध्ययन में एक नई दिशा प्रदान करेगा | हिंदी आत्मकथा की लोकतांत्रिक चेतना की अभिव्यक्ति के स्वरूप के अध्ययन के क्रम में अभिव्यक्ति के आयाम एवं लोकतांत्रिक मूल्यों में होते परिवर्तनों ने हिंदी आत्मकथाओं को किस रूप में प्रभावित किया ? साथ ही स्वाधीनता आंदोलन के समय लोकतांत्रिक चेतना ने हिंदी आत्मकथा लेखन को एवं आत्मकथा लेखन ने स्वाधीनता आंदोलन के लोकतांत्रीकरण को कैसे प्रभावित किया उसकी एक व्यापक समझ बनाने को मैं भी इस शोध

की भूमिका रहेगी।

पूर्व शोध कार्य एवं शोध की मौलिकता —

प्रस्तावित शोध 'हिंदी आत्मकथा लेखन में लोकतांत्रिक चेतना की अभिव्यक्ति के स्वरूप का अध्ययन' से संबंधित शोध कार्य नहीं हुआ है | शोधगंगा एवं विभिन्न विश्वविद्यालय की वेबसाइट में मिली जानकारी से यह ज्ञात हुआ है कि हिंदी आत्मकथाओं पर दलित आत्मकथाएं एवं महिला आत्मकथाओं पर शोध कार्य हुए हैं परंतु हिंदी आत्मकथाओं में लोकतांत्रिक चेतना की अभिव्यक्ति के स्वरूप के अध्ययन पर अभी तक कार्य नहीं हुआ है अतः यह शोध कार्य पूर्णतया नवीन एवं मौलिक है | मेरे शोध कार्य से पूर्व हिंदी आत्मकथाओं पर जो शोध कार्य हुए हैं वह निम्न है :

1. आत्मकथाओं में आत्म और समाज, नूतन कुमारी, वनस्थली विश्वविद्यालय ,2006
2. आत्मकथा साहित्य में युगबोध , रमेश कुमार खुराना, छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय 1993
3. आत्मकथा लेखन और वाल्मीकि के झूठन का गवेषणात्मक अध्ययन, ललित नारायण, मिथिला विश्वविद्यालय 2008
4. हरिवंश राय बच्चन का आत्म कथा साहित्य , राकेश रंजन, भागलपुर विश्वविद्यालय 2009
5. समकालीन महिला लेखिकाओं की आत्मकथाओं में मुक्ति का प्रश्न प्रीति सिंह , बुंदेलखंड विश्वविद्यालय 2014

साहित्य सर्वेक्षण —

शोध विषय से संबंधित जानकारी विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों से प्राप्त की गई है—

1. दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट, आगरा
2. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
3. के. एम. आई. आगरा

4. जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली

5. दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

शोध प्रविधि–

'हिंदी आत्मकथा लेखन में लोकतांत्रिक चेतना की अभिव्यक्ति के स्वरूप का अध्ययन साहित्यिक' एवं सामाजिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है | किसी भी शोध कार्य को करते समय शोधार्थी को एक शोध पद्धति का अनुसरण करना होता है | हिंदी आत्मकथाओं में लोकतांत्रिक चेतना की अभिव्यक्ति के स्वरूप का अध्ययन करने हेतु गहन एवं व्यापक दृष्टिकोण से गंभीर अध्ययन की आवश्यकता होगी | प्रस्तावित शोध कार्य को करते समय शोध की मौलिकता के साथ शोध की प्राथमिकता को ध्यान में रखते हुए, विभिन्न आधार एवं संदर्भ ग्रन्थों को देखते हुए प्रस्तावित शोध में विश्लेषणात्मक, समीक्षात्मक, विचारात्मक एवं समाजशास्त्रीय आदि पद्धतियों का प्रयोग किया जाएगा | शोध की आवश्यकतानुसार प्रश्नावली, संबंधित समुदाय के व्यक्तियों का साक्षात्कार, संबंधित व्यक्तियों के जीवन की सामाजिक जद्द-जहद का व्यापक अवलोकन आदि के साथ-साथ साहित्यिक सर्वेक्षण, शोध पत्र, मैगजीन, पत्र पत्रिकाएं ,पुस्तकें, शब्दकोश, विश्वकोश एवं इंटरनेट आदि का उपयोग किया जाएगा |

रूपरेखा

प्रथम अध्याय :हिन्दी गद्य आधुनिकता और आत्मकथा की संस्कृति

1.1 आधुनिकता के उदय के ऐतिहासिक संदर्भ

1.2 अभिव्यक्ति की लोकतंत्रात्मकता और विभिन्न विधाएं

1.3 आत्मभिव्यक्ति के ऐतिहासिक आयाम और आत्मकथाएं

1.4 अभिव्यक्ति के बदलते आयाम और हिन्दी आत्मकथाएं

द्वितीय अध्याय: हिन्दी आत्मकथाओं में लोकतान्त्रिक चेतना का विकास

2.1 आधुनिक हिन्दी आत्मकथा और लोकतान्त्रिक चेतना का संघर्ष

2.2 दमन और प्रतिरोध: संदर्भ हिंदी आत्मकथ

2.3 'स्वानुभूति' और 'परानुभूति' : संदर्भ हिन्दी आत्मकथाएं

तृतीय अध्याय: हिन्दी आत्मकथाओं में अभिव्यक्ति का स्वरूप

3.1 भारतेन्दु युगीन प्रमुख हिन्दी आत्मकथाएं

3.2 द्विवेदी युगीन प्रमुख हिन्दी आत्मकथाएं

3.3 छायावाद युगीन प्रमुख हिन्दी आत्मकथाएं

3.4 प्रगतिवाद से स्वातंत्र्य काल तक की प्रमुख हिन्दी आत्मकथाएं

चतुर्थ अध्याय :हिन्दी आत्मकथाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन

4.1 हिन्दी आत्मकथाओं में मध्यवर्गीय जीवन

4.2 हिन्दी आत्मकथाओं में आजादी से उभरता मोहभंग

4.3 ग्रामीण परिवेश से शहरी जीवन की तरफ होता पलायन : संदर्भ हिन्दी आत्मकथाएं

4.4 मध्यवर्गीय बुद्धजीवी वर्ग का अकेलापन एवं अजनबीपन : संदर्भ हिन्दी आत्मकथाएं

पंचम अध्याय :हिन्दी आत्मकथाओं में हाशिये का समाज

5.1 दलित आत्मकथाएं

5.2 स्त्री आत्मकथाएं

5.3 आदिवासी आत्मकथाएं

उपसंहार

परिशिष्ट

आधार ग्रंथ

शब्दकोश

विश्वकोश

संदर्भ ग्रंथ

वेवसाइट्स

पत्र – पत्रिकायेँ

विशेष- निर्देशक के परामर्श से अध्यायों मैं 20% परिवर्तन किया जा सकता है |

आधार ग्रंथ-

1. कुछ आप बीती कुछ जग बीती, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, आत्मकथात्मक लेख

2. निजी वृत्तान्त , अंबिकादत्त व्यास , प्रथम संस्करण 1901

3. मेरी आत्मकहानी , श्यामसुंदर दास, इंडियन प्रेस , 1941

4. मेरी असफलताएँ, बाबू गुलाबराय,प्रभात प्रकाशन, 1941

5. सिंहावलोकन , यशपाल, लोकभारती प्रकाशन , (भाग-1 1951), (भाग-2 1952), (भाग-3 1955)

6. अपनी खबर ,बेचन शर्मा उग्र,राजकमल प्रकाशन , 2022

7. अपने- अपने पिंजरे, मोहनदास नैमिशराय, वाणी प्रकाशन (भाग-1 2021),(भाग-2 1921)

8. जूठन, ओमप्रकाश वाल्मीकि,राधाकृष्ण प्रकाशन, (भाग-1 2021),(भाग-2 2022)

9. मुर्दहिया, तुलसीराम ,राजकमल प्रकाशन , 2022

10. मणिकर्णिका ,तुलसीराम राजकमल प्रकाशन , 2023

11. कस्तूरी कुंडल बसै, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन ,2023

12. गुड़िया भीतर गुड़िया, मैत्रेयी पुष्पा, राजकमल प्रकाशन ,2022

13. हादसे, रमणिका गुप्ता ,राधाकृष्ण प्रकाशन ,2019

14. आपहुदरी, रमणिका गुप्ता, राधाकृष्ण प्रकाशन , 2020

15. एक कहानी यह भी, मन्नू भण्डारी,राधाकृष्ण प्रकाशन 2016

16. अन्या से अनन्या, प्रभाखेतान ,राजकमल प्रकाशन,2022

17. पिंजरे की मैना, चन्द्रकिरण सोनरेक्शा,पूर्वोदय प्रकाशन ,2021

18. दोहरा अभिशाप, कौसल्या बैसंत्री, परमेश्वरी प्रकाशन ,2022

19. शिकंजे का दर्द, सुशीला टाकभौरे ,वाणी प्रकाशन 2020

20. जंगल से आगे, सीता रत्न माला प्यारा कर्केट्टा फ़ाउंडेशन ,2018

संदर्भ ग्रंथ –

1. आत्मकथा और संस्कृति , पंकज चतुर्वेदी, वाणी प्रकाशन, 2011

2 उपन्यास और लोकतन्त्र,मैनेजर पांडे ,वाणी प्रकाशन,2018

2. आत्मकथा अंक , मुंशी प्रेमचंद , विश्वविद्यालय प्रकाशन 2014

3. हिन्दी आधुनिकता एक पुनर्विचार , अभय कुमार दुबे, वाणी प्रकाशन 2014

4. आधुनिकता और हिन्दी उपन्यास, इंद्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन ,2014

5. आधुनिकता और हिन्दी साहित्य , इंद्रनाथ मदान, राजकमल प्रकाशन 2018

6. आधुनिकता पर पुनर्विचार ,अजय तिवारी , भारतीय ज्ञानपीठ 2022

7. इतिहास परंपरा और आधुनिकता , विद्यानिवास मिश्र ,वाणी प्रकाशन 2015

8. दलित आत्मकथाएं , अजमेर सिंह काजल , अनामिका पुब्लिशर्स एंड डिस्टिब्यूटर्स,2018

9. गद्य की विभिन्न विधाओं का विकास , माजदा असद , ग्रंथ अकादमी प्रथम संस्करण 1991

10. हिन्दी आत्मकथा साहित्य का शैलीगत अध्ययन , डॉ कमलापति उपाध्याय, प्रकाशन साहित्य रतनालय कानपुर , प्रथम संस्करण 1992

11. हिन्दी आत्मकथा : स्वरूप व साहित्य , डॉ कमलेश सिंह , नेशनल पब्लिसिंगहाउस, प्रथम संस्करन 1989

12. साहित्यिक विधाएँ : एक पुनर्विचार , डॉ हरिमोहन सिंह , वाणी प्रकाशन प्रथम संस्करण 1997

पत्र-पत्रिकाएँ –

- हंस – दिल्ली
- दलित अस्मिता - नई दिल्ली
- आदिवासी साप्ताहिक – राँची
- इंडिया टूडे – नई दिल्ली

वेब साइट्स-

- http://inflibnet.ac.in
- Shodhganga.inflibnet.ac.in
- http://hiwikipedia.org
- Hindisamay.com
- http://wikipedia.org
- http:booksgoogle.com.in